gradeup

कला और संस्कृति समसामयिकी अप्रैल २०२०

Prep Smart. Score Better. Go gradeup

www.gradeup.co

कला और संस्कृति

तब्लीगी जमात

खबरों में क्यों है?

• हाल ही में, दिल्ली के मरकज़ निज़ामुद्दीन में जमा हुए 4000 संदिग्ध व्यक्तियों में से 200 से अधिक व्यक्तियों के कोविड-19 के टेस्ट पॉजिटिव पाए गए हैं। जो तब्लीगी जमात का मुख्यालय था।

तब्लीगी जमात क्या है?

• तब्लीगी जमात का अर्थ विश्वास फैलाने के लिए समाज से है, यह एक सुन्नी इस्लामी मिशनरी आंदोलन है।

• यह बाद के औपनिवेशिक भारत में धार्मिकता के सबसे प्रमुख रूपों में से एक के रूप में उभरा है। धर्मांतरण आंदोलन का उद्देश्य आम मुसलमानों तक पहुंचना और उनके विश्वास को पुनर्जीवित करना है, विशेष रूप से अनुष्ठान, पोशाक और व्यक्तिगत व्यवहार के मामलों में पुनर्जीवित करना है।

यह आंदोलन कैसे शुरू हुआ था?

• इसकी जड़ें हनफ़ी धर्मशास्त्र स्कूल के देवबंदी संस्करण से जुड़ी हैं।

• इसे देवबंद के मौलवी और प्रमुख इस्लामिक विद्वान मौलाना मुहम्मद इलियास खंडालाव ने 1927 में मेवात में शुरू किया था।

• इसका उद्भव हिंदू धर्मांतरण आंदोलनों के साथ मेल खाता है।

यह इस्लाम को कैसे बढ़ावा देता है?

तब्लीगी जमात छह सिद्धांतों पर आधारित है:

1) पहला कलीमाह है, यह विश्वास का एक लेख है जिसमें तब्लीगी स्वीकार करता है कि कोई भगवान नहीं है, लेकिन अल्लाह और वह पैगंबर मुहम्मद उसका दूत है।

2) दूसरा सलात या रोजाना पांच बार की नमाज अदा करना है।

3) तीसरा इल्म और धिक्र, अल्लाह का ज्ञान और स्मरण सत्रों में आयोजित किया जाता है जिसमें जनसमूह इमाम द्वारा दिए गए उपदेश को सुनती है, नमाज़ अदा करती है, कुरान पढ़ती है और हदीथ पढ़ती है।

4) चौथा सिद्धांत इकराम-ए-मुस्लिम है, साथी मुसलमानों का सम्मान के साथ उपचार किया जाता है।

5) पांचवा इख़लास-ए-नियत या इरादे की इमानदारी है

6) छठा दावत-ओ-तब्लीग या धर्मांतरण है

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1-कला एवं संस्कृति

स्रोत- द हिंदू

भारत में वसंत कृषि त्योहार

खबरों में क्यों है?

• भारत के राष्ट्रपति ने वैसाखी, विशु, रोंगाली बिहू, नाबा बरशा, वैसाखड़ी, पुथंडू, पीरप्पु के अवसर पर लोगों को शुभकामनाएं दीं हैं, जो भारत में वसंत कृषि त्यौहार के रूप में देश के विभिन्न हिस्सों में मनाए जा रहे हैं।

• वैशाख महीने का पहला दिन (13 अप्रैल, 14 या 15 अप्रैल), हिंदू नववर्ष की शुरूआत का प्रतीक है।

• जिसे विभिन्न नामों से बैसाखी या वैसाखी (यूपी, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और पंजाब), पुथंडू (तमिलनाडु), विशु (केरल), महाबिशुवा संक्रांति (ओडिशा), रोंगाली बिहू (असम) और पोइला बोइशाख (बंगाल) कहा जाता है। यह वसंत फसल का उत्सव भी है।

भारत में वसंत कृषि त्योहारों के प्रकार

A. **रोंगाली बिहू**

• रोंगाली बिहू को बोहाग बिहू के नाम से भी जाना जाता है, यह असम में मनाया जाता है।

• यह त्योहार असम और पूर्वोत्तर भारत के अन्य हिस्सों में मनाया जाता है।

• बोहाग बिहू या रोंगाली बिहू त्यौहार, सात दिनों तक जारी रहता है और इसे सात बिहु भी कहा जाता है। इन सात दिनों को छोट बिहू, गोरू बिहू, मनुह बिहू, कुटुम बिहू, सेनेही बिहू, मेला बिहू और चेरा बिहू के रूप में जाना जाता है।

• यह असमिया नव वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है।

• यह हिंदू सौर कैलेंडर के पहले दिन को चिन्हित करता है और इसे बंगाल, मणिपुर, मिथिला, नेपाल, उड़ीसा, पंजाब, केरल और तमिलनाडु में भी मनाया जाता है, इसलिए इसे अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है।

• किसान, धान की खेती के लिए खेत तैयार करते हैं और चारों ओर हर्ष की अनुभूति होती है।

पोइला बोइशाख

• पोइला बोइशाख को पहेला बैशाख या बंगला नाबाबरशा के नाम से भी जाना जाता है, बंगाली कैलेंडर का पहला दिन है।

• बोइशाख, बंगाली कैलेंडर का पहला महीना है और पोइला का अर्थ पहला है। अत: पोइला बोइशाख का अर्थ बोइशाख महीने का पहला दिन है, इस प्रकार, यह नए वर्ष की शुरूआत को चिह्नित करता है। लोग एक दूसरे को शुभो नोबोबोरशों कहकर शुभकामनाएं देते हैं, जहां नाबा का अर्थ नया और बोरशों का अर्थ वर्ष है, जिसका एक साथ अर्थ नव वर्ष है।

• ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार, बंगाली नववर्ष सामान्यत: 14 अप्रैल या 15 अप्रैल के आसपास पड़ता है। इस वर्ष पोइला बोइशाख, 14 अप्रैल को मनाया जाएगा।

• बंगाली सौर कैलेंडर के शुरूआती महीने बैशाख के पहले दिन को भारत के विभिन्न हिस्सों में नाबा बरशा, पोइला बोइशाख और पहेला बैसाख जैसे कई नामों से पुकारा जाता है।

पुथंडु

• पुथंडु, दुनिया भर में तमिलों द्वारा धूमधाम से मनाया जाता है। यह तमिल नववर्ष के पहले दिन को चिह्नित करता है।
• इस दिन, लोग एक-दूसरे को 'पुथंडू वज़थुकल' कहते हैं, जिसका अर्थ 'नववर्ष मंगलमय हो' है
• तमिल नववर्ष वसंत विषुव का अनुसरण करता है और यह सामान्यत: ग्रेगोरियन वर्ष के 14 अप्रैल को पड़ता है।
• मंदिर के शहर मदुरै में, मीनाक्षी मंदिर में चित्तेराई थिरूविझा मनाया जाता है। एक विशाल प्रदर्शनी आयोजित की जाती है, जिसे चित्तेराई पोरूतकातची कहा जाता है।
• पुथंडु को तमिलनाडु और पुदुचेरी के बाहर तमिल हिंदुओं द्वारा भी मनाया जाता है, जैसे श्रीलंका, मलेशिया, सिंगापुर, रीयूनियन, मॉरीशस और अन्य देशों में तमिल प्रवासी हैं।
• यह दिन पारंपरिक तमिल कैलेंडर का पहला दिन मनाता है और तमिलनाडु और श्रीलंका दोनों जगह सार्वजनिक अवकाश होता है।
• म्यांमार, कंबोडिया, थाईलैंड में कई बौद्ध समुदाय और श्रीलंका में सिनहालीस भी उसी दिन अपना नया वर्ष मनाते हैं।

बैसाखी

• इसे वैसाखी, वैशाखी या बैसाखी के नाम से भी जाना जाता है, इसे पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है।

• बैसाखी, सिखों और हिंदुओं के लिए एक वसंत फसल त्योहार है। यह सामान्यत: प्रत्येक वर्ष 13 या 14 अप्रैल को मनाया जाता है।
• यह सिख नव वर्ष को चिह्नित करता है और 1699 में गुरू गोविंद सिंह के अंतर्गत योद्धाओं के खालसा पंथ के गठन की याद दिलाता है।

• वैसाखी भी हिंदुओं का एक प्राचीन त्यौहार है, जो सौर नववर्ष को चिह्नित करता है और वसंत फसल का जश्न भी मनाता है।
• बैसाखी, वह दिन था जब औपनिवेशिक ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकारियों ने एक सभा पर जलियांवाला बाग हत्याकांड को अंजाम दिया था, जो औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारतीय आंदोलन की एक घटना थी।

बिकोटी

• यह उत्तराखंड का त्योहार है, जिसमें लोग पवित्र नदियों में डुबकी लगाते हैं।

जुरशीतल

• यह बिहार और नेपाल के मिथिला क्षेत्र में मनाया जाता है, नए वर्ष को जुरशीतल के रूप में मनाया जाता है।

महाबिशुवा संक्रांति

• यह ओडिशा में मनाया जाता है, जिसे पाना संक्रांति के रूप में भी जाना जाता है। इस त्योहार को मनाने के लिए, ओडिशा सरकार ने ओडिशा में लॉकडाउन के बीच मेरू जात्रा उत्सव को रद्द करने का फैसला किया है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1-कला एवं संस्कृति

स्रोत- पी.आई.बी.

मेरूजात्रा उत्सव

खबरों में क्यों है?

• हाल ही में, ओडिशा सरकार ने महाविषुवा संक्रांति के अवसर पर मंदिरों में मेरू जात्रा उत्सव और उससे संबंधित भीड़ पर प्रतिबंध लगा दिया है।
• महाविषुब संक्रांति, ओडिया नववर्ष की शुरुआत है।

मेरू जात्रा त्योहार के संदर्भ में जानकारी

• यह 'डंडा नाता' नाम से 21 दिनों तक चलने वाली तपस्या के अंत का प्रतीक है। डंडा नाता या डंडा जात्रा, दक्षिण ओडिशा के विभिन्न हिस्सों और विशेष रूप से गंजम जिले में आयोजित किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण पारंपरिक नृत्य समारोहों में से एक है।
• डंडा नाता उत्सव, प्रत्येक वर्ष चैत्र के महीने में आयोजित किया जाता है।
• इस उत्सव में केवल पुरुष व्यक्ति हिस्सा लेते हैं।
• डंडा के प्रतिभागियों को डांडुआस (भोक्ता के रूप में भी जाना जाता है) कहा जाता है।

कुछ प्रमुख विशेषताएं

• गंजम जिला, प्राचीन कलिंग साम्राज्य का हृदय स्थल है।

• कलिंग सम्राटों ने इस चैत्र त्योहार का आयोजन अपनी इस्ता देवी, तारातारिणी के लिए किया था।

• यह माना जाता है कि वर्तमान दिन डंडा नाता, प्राचीन चैत्र यात्रा उत्सवों का एक हिस्सा है जो प्रत्येक वर्ष तारातारिणी शक्ति/ तंत्र पीठ में मनाया जाता है।

• डांडुआस या भोक्ता 13वें, 18वें या 21वें दिन की डंडा अवधि के दौरान देवी काली और शिव की प्रार्थना करते हैं।

• त्योहार के दौरान इन सभी दिनों के लिए सभी 'भोक्ता' या 'डांडुआस' बहुत ही पवित्र जीवन जीते हैं और वे इस अवधि के दौरान मांस, मछली खाने या साथ रहने से बचते हैं।

• डंडा नाता, एक धार्मिक त्योहार का एक रूप है जिसमें नाटकीय और नृत्य घटक होते हैं।

• इसके साथ की घटनाओं के साथ नृत्य का तीन महीने मार्च, अप्रैल और मई के दौरान प्रदर्शन किया जाता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति

स्रोत- द हिंदू

निहंग

खबरों में क्यों है?

• हाल ही में, पटियाला ने राष्ट्रीय लॉकडाउन के दौरान निहंगों और पंजाब पुलिस के बीच एक घटना देखी है।

निहंगों के संदर्भ में जानकारी

• यह सिख योद्धाओं का एक आदेश है, जिनकी प्रमुख विशेषताओं में नीले वस्त्र, तलवार और भाले जैसे पुरातन हथियार और स्टील क्वाइट्स द्वारा सुरम्य रूप से सजाई गई पगड़ी है।

• वे अप्रत्याशित घटनाओं के लिए छरदी कला (हमेशा अधिक जोश में) और तियार बार तियार (हमेंशा तैयार होने की स्थिति) के नारे लगाते हैं।

निहंग कौन बन सकता है?

• जाति, पंथ या धर्म के निरपेक्ष किसी भी व्यक्ति को शामिल किया जा सकता है, बशर्ते उसके पास पंथ में प्रवेश के समय सिख परंपराओं के अनुसार अविभाजित बाल हों।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

• पहले सिख शासन (1710-15) के पतन के बाद, जब मुगल गवर्नर सिखों की हत्या कर रहे थे और अफगानी आक्रमणकारी अहमद शाह दुर्रानी (1748-65) के हमले के दौरान सिख पंथ की रक्षा करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

• उन्होंने अकाल तख्त पर सिखों की भव्य परिषद (सरबत खालसा) आयोजित की थी और प्रस्ताव (गुरमाता) पारित किया था।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति

स्रोत- द हिंदू

देखो अपना देश वेबिनार श्रृंखला

खबरों में क्यों है?

• हाल ही में, पर्यटन मंत्रालय ने कई "गंतव्य" और हमारे अतुल्य भारत की संस्कृति और विरासत की गहनता और विस्तार के बारे में जानकारी देने के लिए अपनी "देखो अपना देश" वेबिनार श्रृंखला शुरू की है।

देखो अपना देश वेबिनार श्रृंखला के संदर्भ में जानकारी

• यह कई स्थानों और अतुल्य भारत की संस्कृति और विरासत की गहनता और विस्तार के संदर्भ में जानकारी प्रदान करने के लिए लॉन्च किया गया है।

• श्रृंखला के पहले वेबिनार का शीर्षक "शहरों का शहर- दिल्ली की व्यक्तिगत डायरी" ने दिल्ली के लंबे इतिहास को छुआ है क्यों कि यह 8 शहरों के रूप में सामने आया है।

• वेबिनार मंत्रालय के सोशल मीडिया हैंडल- इंस्टाग्राम और फेसबुक पर अतुल्य भारत पर उपलब्ध होगा।

भारत की समृद्ध संस्कृति को दर्शाना:

• वेबिनार की श्रृंखला एक चालू सुविधा होगी और मंत्रालय भारत के विविध और उल्लेखनीय इतिहास और संस्कृति को प्रदर्शित करने की दिशा में काम करेगा, जिसमें इसके स्मारक, व्यंजन, कला, नृत्य रूप, प्राकृतिक परिदृश्य, त्योहार और समृद्ध भारतीय सभ्यता के कई अन्य पहलू शामिल हैं।

• इस सत्र का मूल पर्यटन जागरूकता और सामाजिक इतिहास पर आधारित है।

सार्वजनिक क्षेत्र में वेबिनार का शुभारंभ जल्द होगा:

• वेबिनार जल्द ही सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध होगा।
• अगला वेबिनार 16 अप्रैल को सुबह 11 बजे से दोपहर 12 बजे तक है और आगंतुकों को कोलकाता के अद्भुत शहर में ले जाएगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

दरबार चाल

खबरों में क्यों है?

• 144 वर्षों में पहली बार, जम्मू-कश्मीर (जे. एंड के.) प्रशासन ने कोविड-19 संकट के कारण 'दरबार चाल' को रोकने का निर्णय लिया है।

दरबार चाल के संदर्भ में जानकारी

• यह सचिवालय और जम्मू और कश्मीर में श्रीनगर (जम्मू की राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी) से जम्मू (राज्य की शीतकालीन राजधानी) में अन्य सभी सरकारी कार्यालयों के द्वि-वार्षिक सत्र का नाम है।

अवधि

• सचिवालय मई से अक्टूबर तक श्रीनगर में और नवंबर से अप्रैल तक जम्मू में स्थित होता है।

ऐतिहासिक उत्पत्ति

• इन स्थानों पर चरम मौसम की स्थिति से बचने के लिए 1872 में डोगरा राजा महाराजा रणबीर सिंह द्वारा यह अभ्यास शुरू किया गया था।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1-इतिहास

स्रोत- ए.आई.आर.

यूनेस्को की विश्व विरासत समिति

खबरों में क्यों है?

• कोरोनावायरस के प्रकोप के कारण फूझो (चीन) में निर्धारित यूनेस्को की विश्व विरासत समिति का 44वां सत्र स्थगित कर दिया गया है।
• भारत ने वर्ष 1977 में विश्व विरासत सम्मेलन की पुष्टि की थी।

यूनेस्को की विश्व विरासत समिति के संदर्भ में जानकारी

• यह विश्व विरासत सम्मेलन के 21 राज्यों की पार्टियों के प्रतिनिधियों का एक समूह है। यह विश्व विरासत सम्मेलन के कार्यान्वयन हेतु जिम्मेदार है, यह विश्व विरासत कोष के उपयोग को परिभाषित करता है और राज्यों पार्टियों के अनुरोध पर वित्तीय सहायता आवंटित करता है।

• इसमें विश्व विरासत सूची में संपत्ति घोषित करने की अंतिम निर्णय लेने की शक्ति है।

• यह खतरें में विश्व विरासत की सूची पर संपत्तियों के शिलालेख या विलोपन पर भी निर्णय लेता है।

• तीन सलाहकार निकाय, विश्व विरासत समिति के विचार-विमर्श में सहायता करते हैं:

A. अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ

B. अंतर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद

C. सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण और बहाली के अध्ययन हेतु अंतर्राष्ट्रीय केंद्र

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति

स्रोत- यूनेस्को.ऑर्ग

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आई.सी.एच.) की राष्ट्रीय सूची

खबरों में क्यों है?

• केंद्रीय संस्कृति मंत्री (आई/सी) ने नई दिल्ली में भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आई.सी.एच.) की राष्ट्रीय सूची का शुभारंभ किया है।

अमूर्त विरासत की सुरक्षा हेतु सम्मेलन

• इसे संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा वर्ष 2003 में अपनाया गया था और वर्ष 2006 में लागू किया गया था।

• यह पहल संस्कृति मंत्रालय के विजन 2024 का एक हिस्सा भी है।

• भारत से अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में शामिल किया गया है।

अमूर्त सूची के क्षेत्र

• सूची को पांच व्यापक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत दर्शायी गई हैं:

• मौखिक परंपरा और अभिव्यक्ति, जिसमें भाषा को कला का प्रदर्शन करने वाली अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहन के रूप में शामिल किया गया है।

• सामाजिक प्रथाएं, अनुष्ठान और महोत्सव कार्यक्रम

• प्रकृति और ब्रह्मांड से संबंधित ज्ञान और प्रथाएं

• पारंपरिक शिल्प कौशल

उद्देश्य:

• इसका उद्देश्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के विभिन्न राज्यों से विभिन्न अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्वों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

• वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं द्वारा लुप्तप्राय अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की अभिव्यक्तियों की सुरक्षा करना

• समुदायों, समूहों और व्यक्तियों की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत हेतु सम्मान सुनिश्चित करना

• अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के महत्व के स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता बढ़ाना

भारत में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में कुल 13 अमूर्त सांस्कृतिक विरासत शमिल की गई हैं।

इसमें शामिल है:

• कूदीयाट्टम, संस्कृत थिएटर, केरल

• मुदियेत्त: केरल का एक पारंपरिक थिएटर

• वैदिक जप की परंपरा, रामलीला- रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन

• राम्मन: गढ़वाल हिमालय का धार्मिक उत्सव और पारंपरिक थियेटर

• कालबेलिया: राजस्थान के लोक गीत और नृत्य

• छाऊ नृत्य: पूर्वी भारत की एक परंपरा

• लद्दाख के बौद्ध जप: ट्रांस हिमालयी लद्दाख क्षेत्र, भारत के जम्मू और कश्मीर में पवित्र बौद्ध ग्रंथों का पाठ

• संकीर्तन, पारंपरिक गायन, ढोलक और मणिपुर का नृत्य

• पंजाब के जंडियाला गुरू के थिएटरों के बीच बनाए जाने वाले पारंपरिक पीतल और तांबे के शिल्पकार बर्तन
• योग
• कुंभ मेला (हाल ही में जोड़ा गया है)

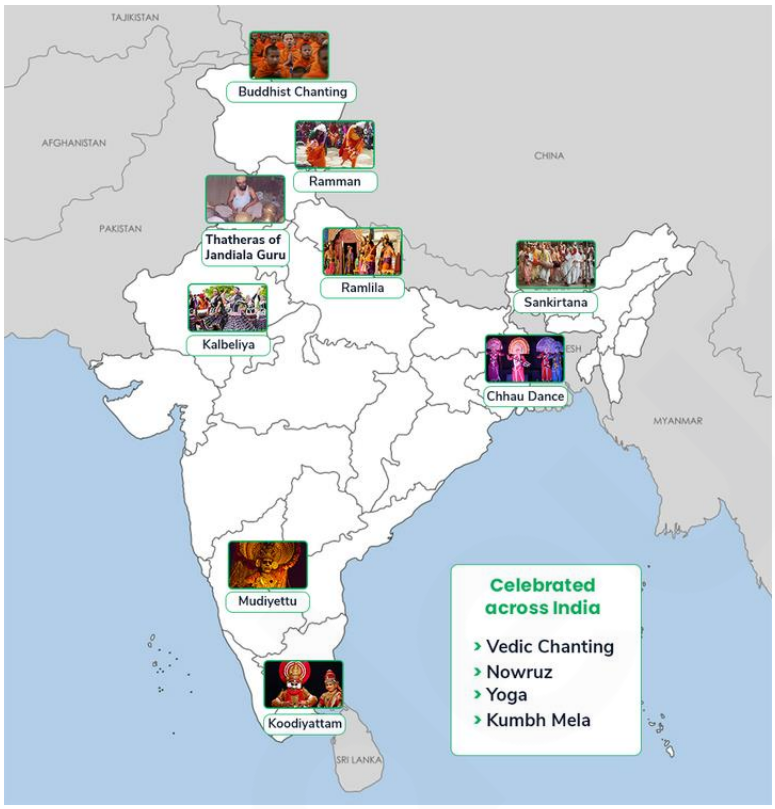

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति
स्रोत- पी.आई.बी.

देवनहल्ली चकोटा

खबरों में क्यों है?

• हाल ही में, बैंगलोर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा लिमिटेड (बी.आई.ए.एल.) ने अपने सी.एस.आर. कार्यक्रम 'नम्मा ओरू' के अंतर्गत देवनहल्ली पोमेलो फल की खेती की है।

देवनहल्ली पोमेलो के संदर्भ में जानकारी

• यह रूटासिया परिवार के खट्टे फल पोमेलो (साइट्रस मैक्सिमा) की एक किस्म है।
• यह विशेष रूप से बैंगलोर ग्रामीण जिले के देवनहल्ली तालुका के आसपास के क्षेत्र में उगाई जाती है। इसे स्थानीय रूप से चकोटा के नाम से जाना जाता है।
• यह भारत सरकार के उत्पादों के भौगोलिक संकेतक (पंजीकरण एवं संरक्षण) अधिनियम (जी.आई. अधिनियम) 1999 के अंतर्गत संरक्षित है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति
स्रोत- द हिंदू

बस्वेश्वर

खबरों में क्यों है?

• हाल ही में, प्रधानमंत्री ने 12वीं सदी के समाज सुधारक बस्वेश्वरा को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की है।

बस्वेश्वरा के संदर्भ में जानकारी

• उन्हें भक्तिभंडारी, बसवन्ना या बसवेश्वर के रूप में भी जाना जाता है, वह कर्नाटक में कलचुरी-वंश के राजा बिज्जला प्रथम के शासनकाल के दौरान 12वीं सदी के दार्शनिक, कन्नड़ कवि और एक समाज सुधारक थे। उन्होंने लिंग या सामाजिक भेदभाव, अंधविश्वास और रिवाजों को खारिज कर दिया था।

• उन्होंने 'अनुभव मंतपा' (या "आध्यात्मिक अनुभव का हॉल") जैसे नए सार्वजनिक संस्थानों की शुरुआत की थी, जिन्होंने सभी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के पुरुषों और महिलाओं का स्वागत किया था, जो जीवन के आध्यात्मिक और सांसारिक सवालों पर खुलकर चर्चा करते थे।

• वह लिंगायत संप्रदाय के संस्थापक थे।

साहित्यिक कार्य

• उन्होंने कविता (वचन) जैसे शत-स्थल-वचन (मोक्ष के छह चरणों के प्रवचन), कला-जनन-वचन (भविष्य के पूर्वानुमान) और मंत्र-गोप्या के माध्यम से सामाजिक जागरूकता फैलाई थी।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1-कला एवं संस्कृति

स्रोत- ए.आई.आर.

gradeup

कला और संस्कृति समसामयिकी अप्रैल २०२०

Prep Smart. Score Better. Go gradeup

www.gradeup.co